अति-तत्काल

सं. 11011/1/2021-हिंदी

भारत सरकार

इस्पात मंत्रालय

(राजभाषा प्रभाग)

उद्योग भवन, नई दिल्ली।

दिनांक: 22 मार्च, 2022

सेवा में,

इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सभी सदस्यगण।

विषय: इस्पात मंत्रालय की पुनर्गठित हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 03.03.2022 को मदुरै में आयोजित बैठक का कार्यवृत्त।

***

माननीय महोदय/महोदया,

इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 03.03.2022 को माननीय इस्पात मंत्री, श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह जी की अध्यक्षता में मदुरै में अपराह्न 04.30 बजे सम्पन्न हुई बैठक का कार्यवृत्त सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए संलग्न है।

कार्यवृत्त की किसी मद के संबंध में यदि कोई टिप्पणी/ सुझाव हो तो कृपया अवगत कराएं।

भवदीया,

अनुलग्नक: यथोपरि

(आस्था जैन)

उप-निदेशक (रा.भा.)

दूरभाष: 011-23063263

सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित:-

i.	इस्पात मंत्री के निजी सचिव
ii.	इस्पात राज्य मंत्री के निजी सचिव
iii.	सचिव(इस्पात) के वरि. प्रधान निजी सचिव
iv.	विशेष सचिव एवं वित्तीय सलाहकार के प्रधान निजी सचिव
v.	अपर सचिव (आर सी) के निजी सचिव
vi.	अपर सचिव (आर सी जी) के निजी सचिव
vii.	मुख्य लेखा नियंत्रक
viii.	इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सभी उपक्रमों के प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी।
ix.	सचिव (रा.भा.) के निजी सचिव
x.	संयुक्त सचिव (रा.भा.) के निजी सचिव

(आस्था जैन)
उप-निदेशक (रा.भा.)

इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 03.03.2022 को मदुरै में सम्पन्न हुई बैठक का कार्यवृत्त।

माननीय इस्पात मंत्री श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में इस्पात मंत्रालय की पुनर्गठित हिन्दी सलाहकार समिति की पहली बैठक दिनांक 03.03.2022 को मदुरै में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची **'अनुबंध'** के रूप में संलग्न है।

2. माननीय समिति अध्यक्ष एवं इस्पात मंत्री महोदय, माननीय ग्रामीण विकास एवं इस्पात राज्य मंत्री महोदय, उपस्थित समिति सदस्यों तथा उच्चाधिकारियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन के बाद सभी सदस्यों को पुस्तक तथा पुष्प-कलिका भेंट कर बैठक विधिवत प्रारंभ हुई।

समिति की सदस्य सचिव महोदया, सुश्री रूचिका चौधरी गोविल (अपर सचिव एवं प्रभारी राजभाषा) द्वारा स्वागत संबोधन के उपरांत मंत्रालय के मुख्य लेखा नियंत्रक, श्री साकेश प्रसाद सिंह तथा उपनिदेशक, सुश्री आस्था जैन (राजभाषा) द्वारा मंत्रालय तथा सभी उपक्रमों की कार्य-उपलब्धियों पर प्रस्तुतिकरण दिया गया।

तत्पश्चात, समिति अध्यक्ष माननीय इस्पात मंत्री ने सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत और अभिनंदन करते हुए अपनी खुशी जाहिर करके कार्यक्रम प्रारंभ किया और सभी सदस्यों का परिचय प्राप्त किया। माननीय अध्यक्ष महोदय ने कोविड के चलते नियमित बैठकें नहीं हो पाने पर खेद व्यक्त किया तथा भविष्य में नियमित बैठकों का आश्वासन दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम सभी लोग माननीय प्रधानमंत्री जी के लक्ष्यों के तहत कार्य कर रहे हैं। हिंदी भाषा की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि यदि आप हिंदी में प्रवीण हैं, दक्ष हैं तो इससे आपको गौरवान्वित होना चाहिए। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि सभी भाषाओं का संवर्धन होना चाहिए और किसी भी भाषा की जानकारी होना अच्छी बात है। शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। मंत्रालय और इसके उपक्रमों में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) का पूर्णत: अनुपालन किया जा रहा है। उन्होंने मंत्रालय के कुछ उपक्रमों द्वारा त्रिभाषी शब्दकोश के निर्माण की प्रशंसा की और उसे एक मौलिक कार्य बताया। उन्होंने समिति सदस्य वक्ताओं के सुझाव आमंत्रित करते हुए आश्वासन दिया कि माननीय सदस्यों द्वारा जो भी सुझाव दिए जाएंगे, उन्हें मंत्रालय और इसके उपक्रमों द्वारा नियमानुसार लागू करने का भरसक प्रयास किया जाएगा जिससे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में और अधिक प्रगति होगी। तत्पश्चात् उन्होंने क्रमश: सभी उपस्थित सदस्यों से सुझाव देने का आग्रह किया।

3. समिति सदस्य **श्री संजय सेठ** ने सबसे पहले अध्यक्ष महोदय तथा उपस्थित सदस्यों को हिंदी के प्रति गंभीरता के लिए साधुवाद दिया और कहा कि हिंदी के माध्यम से पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया जा सकता है। उन्होंने अटल जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ)

में हिंदी में दिए गए भाषण पर सारे देश से मिली शुभकामनाओं का जिक्र करते हुए माननीय सांसद महोदय ने अपनी बात शुरू की। आज सभी लोग माननीय प्रधानमंत्री जी का हिंदी का संबोधन सुनना पसन्द करते हैं। उन्होंने सभी सहभागियों से सुगम और सहज शब्दों के प्रयोग का अनुरोध किया। उन्होंने कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी को बढ़ावा देने तथा इसमें सहभागियों पर ध्यान देने की बात कही। उन्होने विज्ञापन में हिंदी पर खर्च पर भी ध्यान देने को कहा और कहा कि हिंदी पूरे विश्व में मार्केटिंग की भाषा बन चुकी है। मंत्रालय एवं उपक्रमों द्वारा विभिन्न अवसरों पर हिन्दी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के लिए संगोष्ठियों का प्रायः आयोजन किया जाता रहा है। इस पर समिति सदस्य श्री संजय सेठ ने कहा कि किन अवसरों पर यह आयोजन किया जाता है, कितने लोग कार्यक्रम में सम्मिलित होते हैं तथा कितने आयोजन किए गए, इस तरह की स्पष्ट जानकारी रिपोर्ट में दी जानी चाहिए।

4. समिति सदस्य **श्री सुनील कुमार सोनी** ने आजादी के 75वें वर्ष के जश्न और आजादी के अमृत महोत्सव की महत्ता से अपनी बात प्रारंभ की। उन्होंने बताया कि कई राज्यों के उद्योगपति हिंदी न जानने के कारण अपने व्यापार में भी नुकसान उठा रहे हैं। यदि कोई व्यापारी अपने उत्पाद का प्रसार करना चाहते हैं तो उन्हें हिंदी जानने से और अधिक लाभ होगा। सार्वजनिक जीवन में हिंदी आपके व्यक्तित्व का परिचय कराती है। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर नवीन विचारों के साथ सबको आगे आना चाहिए।

5. समिति सदस्य **श्री गोपाल कृष्ण फरलिया** ने अमृत महोत्सव पर सभी से यह शपथ लेने का आग्रह किया कि राजभाषा का शत-प्रतिशत उपयोग करेंगे। उन्होंने प्रदत्त आंकड़ों पर कहीं-कहीं प्रतिशतता पर अपनी अप्रसन्नता जाहिर की और अगली बैठक में इसे सुधारने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि अनुवाद न कराएं बल्कि मूलत: काम हिंदी में ही करें। जो हिंदी में काम कर रहे हैं उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत किया जाए और उनकी 'वार्षिक कार्य-निष्पादन रिपोर्ट' में प्रविष्टि भी की जाए। उन्होंने माननीय मंत्री महोदय से अनुरोध किया कि हिंदी सलाहकार समिति की तरफ से विद्यार्थी स्तर से ही अच्छी हिंदी पढ़ाई जाने के बारे में शिक्षा मंत्री को एक पत्र लिखा जाना चाहिए। हिंदी की टिप्पणियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। मदों के उत्तर स्पष्ट होने चाहिए। किसी भी कार्य का प्रतिशत पहले या पिछली रिपोर्ट से कम नहीं होना चाहिए तथा राजभाषा नियमों के अनुरूप होना चाहिए। समिति के सदस्यों को विभिन्न उपक्रमों के लिए नामित करने की बात की तथा सभी सदस्यों को पत्रिकाएं भेजने की भी बात कही। हिंदी अनुभागों में खाली पदों पर आपत्ति जताई। हिंदी पदों पर दूसरों की नियुक्ति और हिंदी अधिकारियों के लिए पदोन्नति के कम अवसरों पर भी आपत्ति दर्ज की। राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित 55% हिंदी पत्राचार के लक्ष्य के समक्ष 'ग' क्षेत्र के विशाखापट्टनम स्थित राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड कार्यालय का 97% कार्य अत्यधिक सराहनीय है। इस्पात के 'ग' क्षेत्र के कार्यालय हिंदी में ज्यादा अच्छा कार्य कर रहे हैं और 'क' क्षेत्र वाले नहीं कर रहे

हैं। इससे राजभाषा के प्रति उनकी अनुचित मन:स्थिति का आभास होता है। माननीय मंत्री जी ने आपके सुझावों को सराहा व उन पर गौर करने का आश्वासन दिया।

6. समिति सदस्य **श्री महेश बंशीधर अग्रवाल** ने कहा कि इस बैठक के आयोजन के लिए माननीय मंत्री जी तथा सभी लोग बधाई के पात्र हैं। उन्होंने राजभाषा का शत-प्रतिशत उपयोग की शपथ लेने का आग्रह किया। प्रदत्त आंकड़ों की प्रतिशतता पर अपनी शंका जाहिर की और अगली बैठक में इसे सुधारने का सुझाव दिया। आयोजन को बहुत अच्छा बताया और समस्त टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कंपनियों के नाम द्विभाषी करने के मामले में तकनीकी बाध्यता कहकर फुल स्टॉप न लगाएं अपितु समाधान निकालें। इस्पात मंत्रालय की कार्यशाला "हिंदी की सरलता से इसकी स्वीकार्यता बढ़ेगी" विषय का पक्षधर बताते हुए पुन: इस बात को दोहराया कि जटिलता ने ही भाषा को आम जनमानस से दूर किया है। हिंदी के रिक्त पदों की स्थिति पर उन्होंने खेद व्यक्त किया। पहले तो राजभाषा के पद सब जगह मिलते नहीं और जो मिलते तो वे भरे नहीं जाते हैं, इस स्थिति को सुधारना जरूरी है। सेल एवं एमएसटीसी द्वारा विज्ञापन पर कम खर्च किये जाने की ओर उन्होंने ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने हिंदी व्यवसाय से/ नौकरी से/ कानून से नहीं जुड़ पा रही, इस पर खेद व्यक्त किया। उन्होंने अपेक्षा की कि उनकी आवाज ऊपर तक पहुंचाई जाए और भाषा को शिक्षा के जमीनी स्तर पर मजबूती से जोड़ा जाए।

माननीय मंत्री जी ने आपके शब्द चयन की सराहना करते हुए कहा आज भाषा की गुणवत्ता और सुगमता बहुत जरूरी है। उन्होंने इस बात को विशेष रूप से उल्लिखित किया कि आजकल मंत्रिमंडल की बैठकों की भी सभी प्रस्तुतियां व चर्चाएं केवल और केवल हिंदी में ही हो रही हैं।

माननीय मंत्री महोदय ने सुझावों की और शब्द चयन को महत्वपूर्ण बताया तथा कहा कि भाषा सुगम होनी चाहिए ताकि सबको समझ आए।

7. समिति सदस्या **श्रीमती डॉ. रिंकू कुमारी** ने माननीय इस्पात मंत्री जी को अपार ऊर्जा के स्रोत, त्वरित निर्णय लेने वाले व्यक्तित्व के रूप परिभाषित करते हुए कार्यक्रम हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से अंग्रेजी के प्रति चाटुकारिता व गुलामी की विडम्बना के चलते आज भी भारत में अंग्रेजी को प्रथम राजभाषा जैसा दर्जा मिलना, दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उनका कहना था कि "जनता के लिए, जनता द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा भी जनता की ही होनी चाहिए और वह केवल हिंदी हो सकती है। जहां आवश्यकता है वहां अंग्रेजी का उपयोग हो तो भी ठीक होगा परंतु हमें जमीन से जुड़ा रहना भी जरूरी है।" सदस्या ने उप-समिति बनाने का सुझाव दिया। इस्पात मंत्रालय के सभी सदस्य हिंदी के प्रति जागरूक हैं, यह एक सराहनीय कदम है। आपने भाषा के लचीलेपन और सरल शब्दों के प्रयोग का सुझाव दिया।

माननीय मंत्री महोदय ने सुझावों को सराहा और धन्यवाद दिया।

8. समिति सदस्य **श्री सुधीर कसार जी** ने कहा कि आजकल विदेशी मुख्य अतिथि भारत यात्रा पर आते हैं तो हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने हिंदी पुरस्कार योजनाओं का विस्तार करने की बात कही। माननीय महोदय ने सभी सदस्यों की उपर्युक्त सभी बातों पर सहमति दर्शायी तथा कहा कि इस्पात मंत्रालय के कार्य को देखकर लगता है कि यहां हिंदी को विस्तार दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी जब हिंदी में बात करते हैं तो सभी से जुड़ते हैं। वे सभी नीतियां हिदी में बना रहे हैं। मध्य प्रदेश में हिंदी में चिकित्सा क्षेत्र की पढ़ाई शुरू हुई है, यह भी महत्वपूर्ण बात है। छोटे-छोटे प्रस्तुतिकरणों के द्वारा एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से भाषा का विस्तार किया जा सकता है।

माननीय मंत्री महोदय ने आपके सुझावों को सराहा और बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

9. समिति सदस्य **श्रीमान शंकर लाल पुरोहित** ने कहा कि हिंदी प्रेम की भाषा है। यदि कोई क्रोध करता है तो हमें भड़कने की जरूरत नहीं है। साहित्य के माध्यम से हिन्दी स्थापित की जा सकती है। बचपन से ही शुद्ध भाषा सिखाई जानी चाहिये और उन्होंने कहा कि यदि इस्पात की दृढ़ता में हिन्दी की मिठास डालेंगे तो सभी से प्रशंसा मिलेगी। उन्होंने हिंदी को व्याकरण तथा साहित्य के माध्यम से ही नहीं बल्कि सरल कहानियों के माध्यम से भी प्रचारित करने का सुझाव दिया।

माननीय मंत्री महोदय ने आपका आभार व्यक्त किया और कहा कि सिर्फ व्याकरण या शब्द चयन से भाषा नहीं बनती, भाषा में रूचि नहीं बनती, रूचि उस भाषा के साहित्य से बनती है और आनंद आता है - कहकर सदस्य महोदय के सुझाव की सराहना की।

10. समिति सदस्य **श्री देशपाल सिंह राठौड़** ने "मां मीनाक्षी की धरती पर आपके कार्यक्रम को सदा याद किया जाएगा" कहकर अपनी बात प्रारंभ की। आपका सुझाव था कि वेबसाइट हिंदी में ही खुले और वेबसाइट का कंटेंट दोनों भाषाओं में प्रारंभ हो परंतु हिंदी की वेबसाइट में यह मात्रा और बढ़ाई जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी वेबसाइट को प्रतियोगिता का रूप देने का सुझाव राजभाषा विभाग को दिया जाना चाहिए। हिंदी राजभाषा है, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से कहा गया है परंतु अपेक्षित परिणाम आज भी प्रतीक्षित है। अंग्रेजी के बजाय स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी को हटाकर हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए दृढ़ निर्णय की आवश्यकता है। आपने बताया कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) की पत्रिका सुगंध उन्हें नियमित प्राप्त होती है। आपने वर्धा में गांधीजी द्वारा कहे गये वक्तव्य को दोहराया कि "यदि मुझे एक दिन के लिए निरंकुश कर दिया जाए तो मैं एक दिन में अंग्रेजी समाप्त कर दूंगा।" अर्थात दृढ़ निर्णयों की आवश्यकता है।

माननीय मंत्री महोदय ने धन्यवाद दिया तथा सुझावों पर यथा-संभव अमल करने का आश्वासन दिया।

11. श्री प्रणव शर्मा शास्त्री "सक्षम और सौम्य मंत्री द्वय सागर तट पर समुद्र के मोती समेटने के लिए बैठे हैं" ऐसी प्रशंसापूर्ण उक्ति के साथ माननीय सदस्य ने अपना वक्तव्य प्रारंभ करते हुए हिंदी के सामर्थ्य पर अपने विचार बहुत सरलता से अभिव्यक्त किए। रोचक बोधकथाओं के माध्यम से हिंदी की दशा व्यक्त की, जिसमें जंगल के राजा बंदर की दुर्दशा पर हास्य का पुट सम्मिलित किया और बिहारी जी के दोहों के माध्यम से अभिव्यक्ति की शक्ति की महत्ता को प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि राजभाषा के कार्यक्रमों में साहित्य का तड़का हो तो अच्छा रहे। हिंदी पखवाड़े के स्थान पर हिंदी उत्सव मनाएं। अच्छे हिंदी भाषियों को अहिंदी क्षेत्र में 4 दिन के लिए ले जाएं और भाषाओं और विचारों का आदान-प्रदान करें। भाषा का ऑडिट करना हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। दूसरे लोगों के मन में हिंदी के प्रति उत्साह जगाने के लिए हिंदी सेवियों को सम्मानित कर सकते हैं। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए संस्थाओं को सम्मानित करें। बेहद सुरूचिपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हुए माननीय महोदय ने प्रश्न किया कि इन सब अभिनव प्रयोगों से हम राजभाषा की नयनाभिराम छवि बना सकते हैं क्या? रूखे शब्दों का प्रयोग न करें। आपने एक और उदाहरण दिया, विजित सुंदर लंका पर शासन करने के लक्ष्मण के प्रस्ताव पर श्रीराम का उत्तर भी संदेशित किया कि - 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी', अर्थात् जननी/मां/मातृभूमि/मातृभाषा को नहीं छोड़ सकते। तदुपरांत,

"हाथ बांधे क्यों खड़े हो, हादसों के सामने"
"हादसे कुछ भी नहीं हैं हौंसलों के सामने"

कह कर माननीय ने अपनी वाणी को विराम दिया।

माननीय मंत्री महोदय ने सदस्य महोदय के विचारों तथा अभिव्यक्ति की भी सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया।

माननीय इस्पात राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते जी

माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा आप सभी ने भाषा, शब्दों के चयन और भाषा की दूरदृष्टि पर चर्चा की और सुझाव दिए। हमारे प्रधानमंत्री जी जहां भी जाते हैं, हिंदी में ही बोलते हैं। उनके अनुभव का लाभ हम सभी को मिलता है। विवेकानंद जी, अटल जी की हिंदी भाषा पर बहुत अच्छी पकड़ थी। आज हमारे देश में हिंदी भाषा के कारण सूचना तंत्र प्रभावी रूप से आगे बढ़ रहा है। मंत्रालय भी हिंदी भाषा के माध्यम से अच्छे से काम कर रहा है। जैसा कि आप सभी ने सुझाव दिए कि हिंदी भाषा में लेखन, पत्रिका में बढ़ोतरी होनी चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोगों तक संपर्क बढ़ेगा, पहुंच बढ़ेगी। इस्पात राज्य मंत्री जी ने यह भी कहा कि आप सभी (सदस्यो) को इसके परिणाम भी अवश्य दिखेंगे।

माननीय इस्पात मंत्री श्री राम चंद्र प्रसाद सिंह जी

माननीय समिति अध्यक्ष एवं इस्पात मंत्री महोदय ने बैठक में उपस्थित नौ सदस्यों को नवरत्न की संज्ञा से विभूषित करते हुए उनके सुझावों को समसामयिक बताया। इन सभी सुझावों पर नियमानुसार कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आज आए अधिकतम सुझाव व्यवस्था संबंधी थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि कार्य इच्छा से नहीं इच्छाशक्ति से होते हैं। हिन्दी प्रेम की भाषा है, संस्कृति की भाषा है - लादने और थोपने की भाषा नहीं है। हिंदी भाषा का प्रयोग मुख्य रूप से न्यायिक सेवा में नहीं किया जाता। न्यायालय में दोनों पक्ष अपने विचार अंग्रेजी में रखते आए हैं। परंतु आजकल मंत्रिमंडल सदस्य अपनी बातें हिंदी में ही रख रहे हैं। सदस्यों से प्राप्त सुझावानुसार वर्ष में न्यूनतम दो बैठकों के आयोजन का आश्वासन देते हुए माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि अधिकतम बैठकों पर कोई रोक नहीं होगी। उपक्रमों का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है या नहीं यह सुनिश्चित किया जाएगा। सहभागिता के आधार पर एक अलग उप-समिति बनाने का जिक्र भी किया।

राठौर जी के सुझाव का हवाला देते हुए मंत्री जी ने प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले प्रश्नों के भाषायी माध्यम पर भी बात की कि कैसे अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों का जब अनुवाद किया जाता है तो दोनों प्रश्नों में अंतर आ जाता है। सवाल लिखा किसी और ने है और अनुवाद किसी और ने किया है, जिसके कारण अंतर आता है। भाव में अतंर आता है। हिंदी भाषा और शब्दों में क्लिष्टता नहीं होनी चाहिए, भाषा सरल, सुगम होनी चाहिए जो हर किसी को आसानी से समझ आए। प्रधानमंत्री जी हर फोरम में हिंदी में ही बोलते हैं, बातचीत करते हैं। हिंदी जनभाषा है, सबको इसमें काम करने की जरुरत है। कामकाज की भाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती। गैर-हिंदी भाषियों में हिंदी के प्रति दबाव नहीं बनाना है बल्कि हिंदी भाषा में रूचि को बढ़ाना है और अधिक प्रोत्साहित करना है। ऐसा करने से वे अपनी मर्जी से हिंदी सीखेंगे, उनका अपनी रूचि से हिंदी के प्रति लगाव बढ़ेगा। इच्छाशक्ति और सकारात्मक सोच रखकर हम इस्पाती इरादों से आगे बढ़ेंगे।

मंत्री जी ने मंत्रालय के अधिकारियों को इस सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

तदुपरांत उपक्रमों को वर्ष 2018-19, 2019-20, 2020-21 में हिंदी में सराहनीय कार्य हेतु उपक्रमों के प्रमुखों को राजभाषा सम्मान स्वरूप शील्ड व राजभाषा अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया

अंत: **में श्री साकेश प्रसाद सिंह, मुख्य लेखा नियंत्रक ने** बैठक में उपस्थित सभी अतिथियों एवं अधिकारियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि बैठक के सफल आयोजन हेतु मंत्रालय ने अपनी ओर से हर संभव प्रयत्न किए लेकिन फिर भी यदि कोई खामी रह गई हो तो उसके लिए उन्हें खेद है। तत्पश्चात् उन्होंने माननीय अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक के समापन की घोषणा की।

*****

अनुबंध

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 03.03.2022 को मदुरै में हुई बैठक में उपस्थित सदस्यों की सूची

	सर्वश्री/सुश्री	
1.	श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह	अध्यक्ष
2.	श्री फग्गन सिंह कुलस्ते	उपाध्यक्ष
3.	श्री संजय सेठ	सदस्य
4.	श्री सुनील कुमार सोनी	सदस्य
5.	श्री गोपाल कृष्ण फरलिया	सदस्य
6.	श्री महेश बंशीधर अग्रवाल	सदस्य
7.	डॉ. रिंकू कुमारी	सदस्य
8.	श्री सुधीर कसार	सदस्य
9.	डॉ. शंकर लाल पुरोहित	सदस्य
10.	श्री देशपाल सिंह राठौर	सदस्य
11.	डॉ. प्रणव शर्मा 'शास्त्री'	सदस्य

इस्पात मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग के अधिकारीगण

	सर्वश्री/सुश्री	
12.	श्रीमती रसिका चौबे	सदस्य
13.	सुश्री रूचिका चौधरी गोविल	सदस्य-सचिव
14.	श्री साकेश प्रसाद सिंह	उपस्थित
15.	श्रीमती आस्था जैन, उप-निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित
16.	श्री रजनीश कुमार, सहायक-निदेशक (रा.भा.)	उपस्थित

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के अध्यक्ष/अधिकारीगण

	सर्वश्री/सुश्री	
17.	श्रीमती सोमा मंडल, अध्यक्ष, स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली	सदस्य
18.	श्री सुमित देब, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कार्पोरेशन लि0, हैदराबाद	सदस्य
19.	श्री अतुल भट्ट, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्नम	सदस्य
20.	श्री एम.पी. चौधरी, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, मॉयल लिमिटेड, नागपुर	सदस्य
21.	श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एम.एस.टी.सी. लिमिटेड एवं एफएसएनएल लिमिटेड	सदस्य
22.	श्री सलिल कुमार, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, मेकॉन लिमिटेड, रॉची	सदस्य
23.	श्री टी. सामीनाथन, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड, बेंगलूरू	सदस्य
24.	श्रीमती ऊषा सिंह, निदेशक, मॉयल लिमिटेड, नागपुर	उपस्थित
25.	श्री डी के मोहन्ती , निदेशक , आरआईएनएल लि., विशाखापट्नम	उपस्थित
26.	श्री संदीप सिंहा, व. महाप्रबंधक (विपणन एवं रा.भा. प्रभारी)	उपस्थित
27.	श्री ललन कुमार, महाप्रबंधक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि	उपस्थित
28.	श्री रूद्रनाथ मिश्र, उप-महाप्रबंधक, एनएमडीसी लिमिटेड	उपस्थित
29.	श्री संजय उपाध्याय, उप महाप्रबंधक, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	उपस्थित
30.	श्री छगन लाल नागवंशी, राजभाषा अधिकारी, एफ.एस.एन.एल. लिमिटेड	उपस्थित
31.	श्री रजनीश कुमार, राजभाषा अधिकारी, के.आई.ओ.सी.एल. लिमिटेड	उपस्थित
32.	श्रीमती पूजा वर्मा, राजभाषा अधिकारी, मॉयल लिमिटेड	उपस्थित
33.	श्री सुनील साव, राजभाषा अधिकारी, एमएसटीसी लिमिटेड	उपस्थित